राग - परज

इस राग में रिषभ धैवत कोमल है। दो मध्यम आते है बाकी के सभी स्वर शुद्ध है।

थाट - पूर्वी
समय - रात्रि के तृतीय प्रहर के अंत में
वादी - षड्ज (सा)
संवादी - पंचम (प)
जाति - षाडव / संपूर्ण
प्रकृति - विरह श्रृंगार

आरोह - नी सा ग मं प, मं ध नी सां
अवरोह - सां नी ध नी, ध प मं ध नी, ध प ध मं प
गमग मंगरेसा

राग का मुख्य अंग - मंधनीधप, धमंपगमग या सांनीधप मंपधपगमग

शास्त्रीय विवरण - यह राग प्राचीन और प्रसिद्ध है। उत्तरांग प्रधान होने से रात्रि के तृतीय प्रहर के अंत में बसंत राग गाने के पश्चात यह राग गाने का रिवाज है। इसके बिल्कुल समीप का राग बसंत होने से शुद्ध मध्यम का प्रयोग बसंत राग के शुद्ध मध्यम से बिल्कुल अलग ढंग से किया जाता है। लेकिन दोनों रागों की प्रकृति बिल्कुल भिन्न होने से स्वर लगावट विशिष्ट रीति से ही की जाती है। बसंत में शुद्ध मध्यम का प्रयोग सिर्फ राग को प्रकट करने के हेतु से ही जैसे - "सामममग" इतने से ही होता है। जबकि परज में शुद्ध मध्यम का प्रयोग "धमंप, गमग" इस प्रकार ही होता है। बसंत राग में आरोह में "सागमंप" कभी भी नही होता, जबकि इस राग में "नीसागमंप" इस प्रकार सरल रीति से लिया जाता है। उत्तरांग में भी दोनों रागों में बहुत बडा फर्क पडता है बसंत में मंधसां इस प्रकार सीधा षड्ज लिया जाता है, जबकि परज में निषाद का दीर्घत्व होता है, इस कारण "मंधनी--धनीसां" इस प्रकार षड्ज लिया जाता है बसंत में सांनीधप इस प्रकार और परज में सांनीधनीमंधनी इस प्रकार लिया जाता है। परज में बसंत और कालिंगडा का सम्मिश्रण विशिष्ट रूप से होता है। परज गाने के बाद कालिंगडा गाना प्रचार में है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग ऊपर बताये अनुसार "धमंप गमग" होता है और गमपपमग इस प्रकार विशिष्ट रीत से तीव्र मध्यम के सिवा शुद्ध मध्यम लेकर किया जाता है और आलाप की पूर्णाहुति शुद्ध और तीव्र दोनो मध्यम लेकर किया जाता है "मगरेसा" या मंगरेसा" इस प्रकार इस राग का स्वरूप भिन्न - भिन्न रसों में जैसे करुण, विरह, श्रृंगार और कुछ अंश तक भक्तिरस मे व्यक्त है। इस प्रकार चतुर्विध रस का संयोजन श्रद्धापूर्वक नाद की परम उपासना जिसने की है, वे ही कर सकते है।

Scanned with CamScanner

स्वर - विस्तार - (1) सा --- नीसारे, सानीध्नी -- मंध्नीसारे सानीध्नी - सानीध्प -
मंध्नीध्प -- मंध्नी, ध्नीसा --
2) नीसाग -- रेसानी सागा -- गमग -- मगरेसानीसा ग --, गमपप गग मंगरेसा -- ।
3) नीसाग -- मग -- गमंप, मंप, गमग --, मंगरे सा, नीसा गमंप --- मंप, ध्नमंप
गम-ग -- मगरेसा -- ।
4) नीसाग -- मग -- गमंप -- मंप - गमग -- मंगरे सा, गमंप -- मंध्नप -- मंपध्नप
ध्नमंप गमग -- गमपप मंग मंगरेसा
5) गमगमं प -- मंप ध्नमंप गमग -- गमंध्नी --- ध्नप ; -- मंध्नी ध्न-नीध्नप -- प्ध्नमंप
मंगम, ग्रु --- गमंध्नी ध्नी, मंध्नी -- नीध्नप - प-ध्नीध्नप, मंध्नी ध्नी, नी, ध्नप
ध्नमंप गमग, गम पप मग -- मगरेसा ।
6) नीसागमंपमंगमं, गमंपध्नमंप, मं-ध्नी ध्नप --, मंध्नीसां -- नीध्नी - ध्नप पध्नपध्नीध्नीसांनी,
-- ध्नी ध्नप -- मंध्नीसां -- सां --, नीध्नी मंध्नी ध्नीसांनी ध्नप -- पध्नपध्न नीसां - नीध्नप --
मं -- ध्नु नीध्नप ध्नप, ध्नमंप, गमग - मंगरेसा --
7) मंग, मंध्नी, मंध्नीसां नीध्नी, -- मं -- ध्नी, ध्नीसांरेंनीसां नीध्नी, ध्नप -- पध्नीसां
नीध्नप -- प -- ध्नी ध्नप -- मंपमंध्न, प -- मं -- ध्नीध्नप --, मंध्नीसां रेंसां नीध्नप,
ध्नमंप गमग -- मंगरेसा ।
8) मंगमंध्नीसांरेंसां -- नीसांरेंसां - नीध्नी - मंध्न नीसांरेंसां, नीध्नी -- नीसां गंरें - सां --
नीरे -- सारे गं-रेसां - गंमंगं -- रेसां, नीसां रेंसां नीसां गं-रेंसां - गंमंगं - रेंसा ।
रेरेंसानी सांनीध्नी ध्नप -- ध्नपमंप ध्न -- प - ध्नमंप गमग - गम पप मग -- मंगरेसा ।

तान प्रकार - (1) सारेसानी सानीध्नी सारेंसा रेरेंसानी ध्नीसानी सांनीध्प
मंध्नीसा रेरेसानी सा --- ।
2) नीसागग, रेसानीसा, रेरेसानी ध्नीसारे नीसागम, गमगरे, गगरेसा, नीसागम, पमंगम,
गरेगग, रेसानीसा, नीसागम, पध्नपमं गमंपध्न पमंगम पध्नमंप गमगरे गगरेसा नीनीसा - ।
3) गमंध्नगमं पमंपमं गमगरे गगरेसा गमंपमं गमंपध्न पध्नपमं गमंपध्न मंपमंध्न पध्नमंप
गमंपध्न मंपगमं पमंगम गरेनीसा नीसागमं पध्नमंप नीनीध्नप मंपमंध्न, नीनीध्नप,
ध्नध्नपमं पमंपमं गमंपमं गगरेसा नीसा -- ।
4) गमंपध्न मंध्नध्नमं पध्नमंप नीनीध्नप मंध्नीसां रेंरेंसानी ध्नीसांनी ध्नपमंप गमंध्नप,
मंपनीनी ध्नपमंप ध्नध्नपध्न ध्नपमंप गमंपध्न पध्नमंप गमगरे गगरेसा नीसा -- ।
5) मंगमंध्न नीसांरेंरें सांनीध्नी ध्नसांनीध्न नी --- ध्नीसांध्न नीसांध्नी सांरेंसांनी
ध्नसांनीध्न नी --- ध्नसीसांनी ध्नपमंध्न नीसांनीध्न नी -- सांनीध्नप मंगमंध्न नीसांनीध्न
मंध्नीध्न रेंरेंसारें नीसांनीसां नीनीध्नप ध्नीसारें सांनीध्नप मंगमंध्न नीसांरेंरें सांनीध्नी
सारेंनीसां गंगरेंसां नीसांरेंनी सांरेंनीसां नीध्नीध्न पध्नपमं गमगरे गगरेसा ।

Scanned with CamScanner

छोटा - ख्याल

परज

तल - त्रिताल

स्थाई - मैं क्यों गई जमुना पानी सखी, देखत ही मन मोर लियो मेरो, सांवल हाथ बिकानी सखी।

अंतरा - मेरे मन बसी सांवरी सूरत, लोग कहे बौरानी। प्रकट भये बलिहारी श्याम सो, लागी प्रितम छानी सखी॥

स्थाई

सां नी सां नी ध	प ध मं ध	नी - सां -	ध मं ध मं -
क्यों - ग ई	ज मु ना -	पा - नी	सां सां - -
			स खी - -
सां नी - सां रें	सां नी ध प	प ग - म ग	रे - सा सा
दे - खं त	ही - म न	मो - ह लि	यो - मे रो
नी सा - ग ग	ग - मं ध	सां नी - सां रें	(सां) - नी ध
साँ - व ल	ह - ध वि	का - नी स	खी - मैं -
	अंतरा	नी	सां
ध - मं ध	नी नी सां -	सां रें सां रें	नी - सां सां
मे - रे म	न ब सी -	साँ - व री	सू - र त
मं ध रें सां रें	सां नी - मं ध	नी - सां -	- - - -
लो - ग क	हे - बै -	रा - नी -	- - - -
सां नी नी सां रें	सां नी ध प	प ग - मग रे	- रे सा -
प्र क ट भ	ये - ब लि	हा - री - श्या	- म सो -
नी सा - ग -	ग - मं ध	नी - सां रें	(सां) - नी ध
ला - गी -	प्रि - त न	छा - नी स	खी - मैं -
0	3	×	2
		धा धीं धीं धा	धा धीं धीं धा
धा तीं तीं ता	ता धीं धीं धा		

ध्रुपद — परज — ताल - चौताल

स्थाई - सोहे शीश मुकुट कुंडल भाल तिलक,
गुंज माल पीताम्बर कटी काछनी विराजे।

अंतरा - शंख चक्र गदा पद्म कर मुरली अधर धरी,
बिन्द्रावन चंद्र मधे सीरी गोपीनाथ छाजे

स्थाई

सां					
नी -	सां रें	सां सां	ध सां	नी ध	मं ध
सो -	हे शी	- श	मु कु	ट भा	व न
			प	प	
मं -	ध नी	सां नी	ध प	ग म	ग ग
कुं -	- ड	- ल	भा -	ल ति	ल क
		म	ध		
ग रे	सा ग	- ग	मं ध	नी सां	रें सां
गुं -	ज मा	- ल	पि +	तां -	ब र
			ध		
रें गं	रें सां	नी ध	सां -	नी ध	मं ध
क टी	का -	छ -	नी -	वि रा	- जे
X	0	2	0	3	4

अंतरा

ध मं	ग मं	- ध	सां नी सां	- सां	सां सां
शं -	ख च	- क्र	ग दा	- प	द म
				ध	
सां रें	सां रें	नी सां	नी नी	ध सां	नी -
क र	मु र	ली -	अ ध	र ध	री -
सां					
नी रें	गं -	गं गं	मं गं	मं गं	रें सां
बि -	न्द्रा -	ब न	चं -	द्रे म	धे -
सां			नी		
नी रें	गं रें	- सां	ध सां	नी मं	- ध
सी री	- गो	- पी	ना -	था छा	- जे
X	0	2	0	3	4

Scanned with CamScanner